Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 5, April-2019, ISSN 2230-7540

विभिन्न दर्शनों में वर्णित मोक्ष का स्वरूप

Anju Devi*

Research Scholar, Department of Sanskrit, Maharshi Dayanand University, Rohtak, Haryana

सार – ***दर्शन शब्द 'दृशि' दर्शने धातु से बना है। जिसका अर्थ है आलोक! दर्शन मनीषियों के द्वारा अनुभव किए गए सत्य का परिचय देने वाला साहित्य है विभिन्न विद्वानों ने तपस्या एवं स्वाध्याय के बलपर अध्यात्म तत्व का विशेष चिन्तन कर प्रकृति के रहस्यों का उद्घाटन किया तथा अपने जीवन को भी उन तत्वों के अनुशीलन के द्वारा पूर्णत्व की कोटि पर पहुँचाया। यद्यपि अति प्राचीन समय में श्रृंखलाबद्ध दार्शनिक विचारधार प्रचलित न थी किन्तु दार्शनिक चिंता का वैशिस्टय अति प्राचीन काल से ही था जिसका पता हमे बौद्धों के पालि साहित्य जैनो के प्राकृत साहित्य, उपनिषद और महाभारत के शांति पर्व आदि से लग जाता है, अति प्राचीन काल से ही उपनिषदों में वर्णित आत्मा वा अरे द्रष्टव्य अर्थात् आत्मा ही दर्शन व साक्षात्कार का विषय है यह सिद्धांत सर्वत्र मान्य है।***

----------X----------

सामान्य परिचय

दर्शन या दृष्टि शब्द के प्रयोग के मूल में यही सिद्धांत है जो लेाग श्रद्धा संपन्न अर्थात् सत्य धारण करने में उपयुक्त है, अनुकूल मनोवृति से संपन्न है, वे गुरू से अथवा वेद आगमादि अपौरूषेय ग्रंथ समूह से और अन्तरात्मा की वाणी से पहले सत्य को शब्द के रूप में श्रवण करते है। यह श्रवण व्यापार सबके क्षेत्र में बहिरिन्द्रिय के द्वारा ही सम्पादित होगी ऐसा नहीं है। विशुद्ध तथा संस्कारमुक्त बाह्य इन्द्रिय या अन्तःकरण द्वारा यह शब्द ग्रहीत होता है। यह विशुद्ध विकल्प रूप ज्ञान है। अतः भारतीय संस्कृति में आधारस्तम्भ धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चार पुरूषार्थो में से मोक्ष सर्वाधिक जिज्ञासित विषय रहा है। मानव जीवन का यह अंतिम लक्ष्य माना गया है इसी की प्राप्ति के लिए धर्म, अर्थ, काम सहायक होते है। मानव जीवन के इस लक्ष्य के विषय में विभिन्न मतावलम्बी भी इसी से सहमत है किन्तु उनके मार्ग के विषय में उनके मतैक्य नहीं है। कोई ज्ञान को मोक्ष की प्राप्ति का साधन स्वीकार करते है, तो कोई कर्म की, कोई किसी अन्य को इस प्रकार की भिन्न विचार धारा सर्वत्र विद्यमान है।

अतः चार्वाक को छोड़कर सभी भारतीय दर्शनों में मोक्ष को जीवन का परम लक्ष्य माना गया है। भारतीय दार्शनिक केवल मोक्ष के स्वरूप की ही चर्चा नहंी करते अपितु मोक्ष प्राप्ति के लिए निरंतर प्रयत्न करने के लिए भी कहते है। मैक्समूलर ने भारतीय दर्शनों के इस स्वरूप की व्याख्या इन शब्दों में की है भारत में दर्शन की व्याख्या ज्ञान के लिए नहीं अपितु सर्वोच्च लक्ष्य के लिए की गई है जिसके लिए मनुष्य इस जीवन में प्रयत्नशील रह सकता है।[1] मोक्ष के संबंध में प्रायः सभी वादियों का एक मत हैं सभी व्यक्ति दुख निवृति को मोक्ष मानते है परंतु उनके मार्ग के विषय विवाद माना गया है। मोक्ष के विषय में कोई वादी ज्ञानमात्र से ही मोक्ष मानते है। तो कोई ज्ञान और विषय विरक्ति रूप वैराग्य से तथा कोई क्रिया से ही मोक्ष मानते है विभिन्न दर्शनों में मोक्ष के संबंध में मत्त इस प्रकार है।

1. बौद्ध दर्शन में मोक्ष का स्वरूप:-

रागादि वासनाओं के निरोध को निर्वाण कहा जाता है।[2] निर्वाण, मोक्ष को ही कहा जाता है। अतः "बोद्ध" दर्शन के अनुसार मोक्षावस्था में सभी शक्तियों और भावों का अभाव हो जाता है। इस प्रकार इस दर्शन में मोक्ष को अभावात्मक स्थिति कहा गया है। इसके अतिरिक्त बौद्ध दर्शन में आठ अंगो के मार्ग द्वारा दुख निरोध अर्थात् मोक्ष के मार्ग का कथन किया गया है – सम्यक्दृष्टि, सम्यक संकल्प, सम्यक वाक, सम्यक कर्मान्त, सम्यक आजीविका, सम्यक व्यायाम, सम्यक् स्मृति, सम्यक् समाधि।[3] आठ अंगों को तीन भेदों में गर्भित किया गया है - सम्यक् दृष्टि, सम्यक् संकल्प और सम्यक् प्रज्ञा के आते है। अतः प्रज्ञाशील भक्ति और समाधि युक्त व्यक्ति के मार्ग को मुक्ति मार्ग की संज्ञा दी है। समाधि के विकास को प्राप्त करने वाले तीन भेद किये गये है - श्रुतमयी समाधि, चिन्तमयी समाधि और समाधिजन्य

www.ignited.in

निश्चय, ये तीनों सोपान वेदान्त मान्य श्रवण, मनन और निदिध्यासन से समानता रखते है। अतः बौद्ध दर्शन में जो रागदिवासनाओं से मुक्त, सभी शक्तियों और भाव के अभाव को ही मोक्ष की संज्ञा दी है।

2. सांख्य दर्शन में मोक्ष का स्वरूप:-

सांख्य दर्शन में पुरूष और प्रकृति में विभिन्नता का बोध कराने वाले सम्यक् ज्ञान को ही मोक्ष का साधन बताया है क्योंकि तत्व ज्ञान के होने से पुरूष प्रेक्षक की भांति तटस्थ भाव से प्रकृति को देखता है।[4] हरेन्द्र सिन्हा के अनुसार सांख्य मत के कर्म के द्वारा मोक्ष की प्राप्ति संभव नहीं हो सकती। इसके विपरीत ज्ञान जागृत अनुभव की तरह यथार्थ ही होता है अतः सम्यक् ज्ञान से ही मोक्ष की प्राप्ति संभव मानी गई है[5] और सांख्य दर्शन में मूल प्रकृति के निवृत हो जाने पर पुरूष ऐकान्तिक और आत्यन्तिक रूप से कैवल्य की प्राप्ति कर लेता है।[6] इसलिए प्रकृति का निवृत होना ही मोक्ष माना गया है मोक्ष की अवस्था में आत्मा को आनन्द की अनुभूति नहीं होती क्योंकि पुरूष स्वभावतः मुक्त है और त्रिगुणातीत है।[7]

3. न्यायवैशेषिक दर्शन में मोक्ष का स्वरूप:-

मिथ्याज्ञान की निवृत्ति तत्व ज्ञान से होती है तत्वज्ञान होने से साधक को विषयों में दोष दिखाई देने लगता है जिससे उसकी मोक्ष प्राप्ति की प्रवृत्ति करने से क्रीयमाण, संचित और प्रारब्ध कर्मो का नाश हो जाता है और जन्म परम्परा का नाश करते हुए प्राणी समस्त दुखों से छुट जाता है।[8] न्यायवैशेषिक दर्शन में इस प्रकार ज्ञान और कर्म के सम्मुच्चय को ही मोक्ष का साधन माना गया है।

वैशेषिक दर्शन में निम्न नैतिक कर्तव्यों के द्वारा मुक्ति पथ का निर्देशन किया गया है - श्रद्धा, अहिंसा, प्राणी हित साधना, सत्य, अचैर्य, ब्रहमचर्य, अनुपधा, अक्रोध, स्नान, भोजन की पवित्रता, देवोपासना उपवास और अप्रमाद।[9] इन आदर्शों का बिना फल की इच्छा से तत्वज्ञान पूर्वक पालन करने से ही मोक्ष की प्राप्ति होती है।[10]

4. मीमांसा दर्शन में मोक्ष का स्वरूप:-

मीमांसा दर्शन में मोक्ष की साधना दो प्रकार से की गई है (1) काम्य और प्रतिषिद्ध कर्मो का त्याग (2) नित्य कर्मो का सदैव अनुष्ठान। मीमांसा दर्शन में कर्म के साथ ही ज्ञान को भी मोक्ष के पथ का साधन माना है। ज्ञान से तात्पर्य यह समझा जाता है कि आत्मा का संसार से संबंध वास्तविक होते हुए भी अनिवार्य है अनिवार्य है। मोक्ष की अवस्था में आत्मा का संसार से संबंध विच्छेद हो जाता है। इस प्रकार मीमांसा दर्शन में मोक्ष के साधन के रूप में ज्ञान की आवश्यकता और नित्य कर्मो के अनुष्ठान को स्वीकार कर ज्ञान कर्म समुच्चयवाद को माना है।[11] अतः मीमांसा दर्शन में मोक्ष को सुख-दुख से परे होने की अवस्था कहा है वर्तमान शरीर की समाप्ति और भविष्य की अनुत्पति ही मोक्ष है इस अवस्था में न चैतन्य रहता नहीं आनन्द रहता है क्योंकि चैतन्य रहित अवस्था ही आत्मा की स्वाभाविक अवस्था मानी गई है।[12]

5. जैन दर्शन में मोक्ष की अवस्था का स्वरूप:-

जैन दर्शन में सम्यग्दर्शन, सम्यकज्ञान और सम्यक् चरित्र इन तीनों के सम्मिलित रूप को ही मोक्ष मार्ग कहा है।[13] उमास्वामी ने मोक्ष का लक्षण देते हुए कहा है:- बन्धहेत्वभावनिर्जराभ्याम कृत्स्नकर्मविप्रमोक्षो मोक्षः।[14] बन्ध हेतुओं के अभाव से नवीन कर्मो का आगमन तथा संचय नहीं होता और निर्जरा से पूर्व बद्ध कर्मो का क्षय भी हो जाता है। अतः बन्ध हेतुओं का अभाव और निर्जरा के द्वारा समस्त कर्मो का आत्मा से आत्यंतिक क्षय हो जाना ही मोक्ष है।

कहा जाता है कि जैन दर्शन सांख्य और वेदान्त दर्शन की भांति केवल मात्र ज्ञान को ही मोक्ष का साधन मानता है न कि न्यायवैशेषिक और मीमांसा की भांति, ज्ञान कर्म समुच्चय को मोक्ष का मार्ग माना है और भक्ति योग की भांति केवल समर्पण और श्रद्धा को भी मोक्ष का साधन नहीं माना, अपितु तीनों के संयोग को ही मोक्ष का कारण कहा है।[15] पूर्ण निरोग की प्राप्ति के लिए जिस प्रकार औषधी का श्रद्धान, ज्ञान व सेवन रूप को करना आवश्यक है[16] उसी प्रकार समस्त कर्मफल से मोक्ष प्राप्त करने के लिए श्रद्धान ज्ञान और चरित्र इन तीनों की ही आवश्यकता है।

6. वेदान्त दर्शन में मोक्ष का स्वरूप:-

वेदान्त दर्शन में एकमात्र ज्ञान को ही मुक्ति का साधन माना गया है। ज्ञान और कर्म को अन्धकार और प्रकाश तथा उष्णता और शीतलता के समान विपरित माना गया है। अज्ञान रूपी अन्धकार का निवारण एक मात्र ज्ञान रूपी प्रकाश से ही होता है। अतः मोक्ष प्राप्ति में कर्मो की आवश्यकता नहीं है मात्र ज्ञान की ही आवश्यकता है।[17]

सुरेश्वराचार्य ने स्पष्ट कहा है कि उत्पाद्य, संस्कार्य और विकार्थ रूप में ही क्रियाओं के फल दृष्टिगोचर होते है परंतु आत्मा इन चारों क्रियाफलों से अतीत है अतः मोक्ष प्राप्ति कर्मो के द्वारा नहीं हो सकती।[18] अतः न्याय वैशेषिक और मीमांसा के विपरित अद्वैत वेदांत में मोक्ष पूर्ण चैतन्य और

आनन्द की अवस्था है। आत्मा का ब्रहम में विलीन हो जाना ही मोक्ष है इस अवस्था में आत्मा वस्तुतः ब्रहम ही है परन्तु अज्ञान से प्रभावित होकर वह अपने को ब्रहम से पृथक् समझने लगता है यही बन्धन माना गया है। अनादि अज्ञान का आत्यन्तिक अभाव ही मोक्ष है।[19]

निष्कर्ष:-

निष्कर्ष रूप में कहा गया है कि सांसारिक सुख-दुख के अभाव को ही मोक्ष माना है। उपर कहे गए विवेचन से स्पष्ट होता है कि सभी दर्शनों में मोक्ष को स्वीकार किया गया है जबकि मोक्ष का स्वरूप तो समान है लेकिन उसको प्राप्त करने की विधि को भिन्न-भिन्न स्वीकार किया है। मोक्ष के संबंध में कोई वादि तो ज्ञानमात्र से ही मोक्ष मानता है, कोई ज्ञान और विषय विरक्ति रूप वैराग्य से तथा कोई क्रिया से ही मोक्ष के स्वरूप को मानता है। अतः कहा गया है कि विभिन्न दर्शनों में मोक्ष के विषय में भिन्न-भिन्न विचारधाराएं स्वीकार की गई है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. Philosophy was recommended in India nor for the sake of knowledge but for the highest purpose that man can strive after in the life. Six systems of Indian Philosophy. Shri Niwas P. 370
2. षडदर्शन समुच्चय, सूत्र 7
3. भारतीय दर्शन की रूपरेखा, पृ॰ संख्या 101
4. सांख्य कारिका - 64-65
5. भारतीय दर्शन की रूपरेखा पृ॰ 245
6. सांख्य कारिका – 69
7. सांख्य कारिका – 11
8. दुख जन्मप्रवृति दोष मिभ्याज्ञानम् उतरोत्तरापाये तदनन्तरापायाद् अपवर्ग: न्याय सूत्र 1.1.2
9. प्रशस्तपाद भाष्य पृ॰ 640
10. प्रशस्तपाद भाष्य वैशेषिक सूत्र - 1.1.4.
11. हरियन्ना एम, भारतीय दर्शन की रूपरेखा, पृ॰ 333-34.
12. भारतीय दर्शन की रूपरेखा: सिन्हा हरेन्द्र, पृ॰ 22
13. सम्यग्दर्शन ज्ञान चरित्रणि मोक्ष मार्ग: तत्वार्थसू॰ 1.1
14. तत्वार्य सूत्र, श्री उमा स्वामी 10.2
15. राजवार्तिक पृ॰ 14
16. यतः क्रिया, ज्ञान श्रद्धारहिता निःफलेति, यतो मार्ग त्रितयो कल्पना ज्यायसीति राजवार्तिक पृ॰ 14
17. सुरेश्वराचार्य नैषकम्र्य सिद्धि - 1.24
18. उत्पाद्यमाप्य संस्कार्यम् विकार्यच क्रियाफलम्। नैवमुक्तिर्य तस्तस्मात कर्म तस्या न साद्यनम्।। न॰ सि॰ 1.53, नैष्कम्र्यसिद्धि
19. ब्रहमैवाह मस्मित्य.....विनिर्मुक्तः स्यात्। शंकराचार्य तत्वबोध सूत्र 40

Corresponding Author

Anju Devi*

Research Scholar, Department of Sanskrit, Maharshi Dayanand University, Rohtak, Haryana

anjuanjudevi019@gmail.com

www.ignited.in